विजय की अग्रदूत: क्रांतिकारी संघर्ष में बंगाल की महिलाएं

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को अक्सर एक पुरुष-प्रधान क्षेत्र के रूप में चित्रित किया जाता है, लेकिन बंगाल की महिलाएं केवल प्रतिभागी मात्र नहीं थीं; वे प्रतिरोध की वास्तुकार, योद्धा और प्रतीक थीं। लिंग, वर्ग और धर्म की कठोर बाधाओं को चुनौती देते हुए, उन्होंने छाया और मोर्चे दोनों से काम किया, बौद्धिक क्रोध को सशस्त्र विद्रोह के साथ जोड़ दिया।

सशस्त्र अग्रदूत

- **प्रीतिलता वाड्डेदार (1911–1932):** उन्होंने 1932 में पहाड़तली यूरोपीय क्लब पर हमले का नेतृत्व किया और कब्जे के बजाय शहादत चुनी, वीरता और बलिदान का प्रतीक बन गईं।
- **कल्पना दत्त (1913–1995):** चटगाँव शस्त्रागार छापे की एक रणनीतिकार, वह क्रांतिकारी साहित्य की एक प्रमुख व्यक्ति बन गईं, जिसने महिलाओं की भूमिका को समान रणनीतिकार के रूप में प्रदर्शित किया।
- **बीना दास (1911–1986):** बौद्धिक प्रतिरोध को सशस्त्र संघर्ष के साथ जोड़ा, विशेष रूप से बंगाल के गवर्नर की हत्या का प्रयास किया, और शिक्षा जगत और मैदान-ए-जंग दोनों में औपनिवेशिक दमन को चुनौती दी।

बौद्धिक वास्तुकार

- **बेगम रोकैया सखावत hossain (1880–1932):** एक दूरदर्शी नारीवादी, उन्होंने मुस्लिम लड़कियों के लिए एक स्कूल की स्थापना की और अपनी कहानी 'सुल्तानास ड्रीम' में लिंग-उलटे एक आदर्श राज्य की कल्पना की, जिसने मुक्ति की नींव के रूप में महिला शिक्षा की वकालत की।

अदृश्य नेटवर्क

- **कमला दास गुप्ता (1907–2001):** गुप्त रूप से कार्य किया, हथियारों की तस्करी और सुरक्षित स्थानों का समन्वय करने के लिए एक गृहिणी की भूमिका का उपयोग किया, जिससे क्रांति के भूमिगत नेटवर्क को बनाए रखा गया।
- **नानीबाला देवी (1898–1977):** भेष बदलने में माहिर, उन्होंने अपने साथियों को धोखा दिए बिना यातना सहन की, जो क्रांति के सम्मान संहिता का प्रतीक बन गईं।
- **लाबण्या प्रभा घोष (1886–1956):** साक्षरता और गुप्त बैठकों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को संगठित किया, जो क्रांति की बौद्धिक रीढ़ में योगदान देती थीं।

जन-प्रतिरोध का प्रतीक

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"

- **मातंगिनी हाज़रा (1869–1942):** "गांधी बुढ़ी" के नाम से मशहूर, उन्होंने अपने सत्तर के दशक में भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया, पुलिस के हाथों मौत तक तिरंगा थामे रहीं, जो अहिंसक प्रतिरोध का प्रतीक बन गईं।

इन महिलाओं ने साबित कर दिया कि भारत की आजादी की लड़ाई न केवल स्वतंत्रता के बारे में थी, बल्कि लैंगिक समानता के बारे में भी थी।

MENTORA IAS
"YOUR SUCCESS, OUR COMMITMENT"